दैनिक भास्कर
04-Apr-2020
डूंगरपुर भास्कर Page 2

आपस में सोशल डिस्टेंसिंग बनाते हुए करें खेतों में कार्य, स्वयं को रखे सेनेटाइज

डूंगरपुर। कोरोना वायरस संक्रमण फैलने से रोकने के लिए जारी लॉकडाउन और ऐसे में गर्मी बढ़ने के साथ ही किसानों ने खेतों से फसलों को समेटना शुरू कर दिया है। कृषि विज्ञान केन्द्र के विशेषज्ञों ने किसानों को सलाह दी है कि फसलों की कटाई के दौरान इस बार बेहद सतर्कता बरतने की जरूरत है, जहां तक हो घरों में ही रहें व आवश्यक होने पर खेतों में कार्य करते समय मुंह व सर पर कपड़ा बांध कर रखें। आपस में 1 से 2 मीटर की दूरी बनाए रखें। कार्य के पश्चात हाथों को 20 सेकंड तक साबुन से धोएं।मौसम के पूर्वानुमानों में आगामी पांच दिन तक डूंगरपुर तहसील में आसमान साफ रहने की संभावना है। हवा की गति 9 से 20 किलोमीटर प्रतिघंटा के बेग से उत्तरी पूर्वी से उत्तरी पश्चिमी दिशा से चलने तथा अधिकतम तापमान 35 से 38 एवं न्यूनतम 19 से 23 डिग्री से. रहने के साथ वायु में आर्द्रता की मात्रा अधिकतम 15 से 35 प्रतिशत तक एवं न्यूनतम 7 से 10 प्रतिशत रहने की सम्भावना है। विशेषज्ञों ने कहा है कि कोरोना वायरस संक्रमण के मामले लगातार बढ़ रहे हैं, ऐसे में फसल कटाई में लगे किसानों को ज्यादा सतर्कता बरतने की जरूरत है। फसल कटाई यथा संभव मशीन चलित उपकरणों से करें।

कृषि विज्ञान केन्द्र ने काश्तकारों को दिए सुझाव

काश्तकार फसल कटाई के दौरान बरतेंगे सावधानी, तो दूर रहेगा खतरा

पत्रिका

पत्रिका इंडेप्थ स्टोरी

रबी फसल कटाई का चल रहा है दौर

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

डूंगरपुर. कोरोना संक्रमण के दौर में खेतों में रबी की फसल कटने योग्य हो गई है और बड़ी संख्या में काश्तकार परिवार सहित इन दिनों अपनी मेहनत का फल कटाई करने में जुटे हैं। इस दौरान बरती जाने वाली विशेष एहतियात को लेकर कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी डा.सीएम बलाई ने विशेष एडवाइजरी काश्तकारों के लिए जारी की है। काश्तकार इन सुझावों के अनुसार फसल कटाई का कार्य करेंगे, तो वह कोरोना संक्रमण से काफी हद तक बच सकते हैं।

तुरंत चिकित्सक से करें संपर्क

बलाई ने बताया कि यदि किसी काश्तकार या अपने आसपास के रहने वाले लोगों को खांसी, सिरदर्द, बदन दर्द, सर्दी और बुखार के लक्षण नजर आए, तो तुरन्त नजदीकी सरकारी अस्पताल से सपर्क करे। स्वस्थ रहने के लिए देसी फल यथा नींबू, संतरा आदि का भरपूर उपयोग करें।

डूंगरपुर. सोशल डिस्टेंस की पालना के साथ फसल कटवाते कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक।

ये बरतें सावधानियां

- फसल की कटाई यथा संभव मशीनी औजारों से करें।
- फसलों की कटाई देसी औजारों से करने की बाध्यता है, तो कटाई से पूर्व एवं बाद में उपकरणो को सेनेटाइजर से धोए। वह उपलब्ध नहीं हो, तो घर में उपलब्ध कपड़े धोने के डिटरजेंट के घोल में अच्छी तरह धो ले।
- फसल कटाई के दौरान पहने गए कपड़ों को वाशिंग पाउडर से धो कर धूप में सूखा देवे।
- फसल कटाई के दौरान मुंह को अपने मोटे दुपट्टे आदि से अच्छी तरह बांध लेवे।
- खेतों से घर लौटने पर जिस भी वाहन से आ रहे हैं उसमें सभी एक दूसरे से अलग दिशा में मुंह कर बैठे।
- वाहन की स्टेयरिंग, क्लज, गियर्स आदि को वाशिंग पाउडर से धोने के बाद ही इस्तेमाल करें।
- अधिक से अधिक गर्म पानी का ही इस्तेमाल करें तथा नमकीन पानी के गरारे करें।
- दोपहर को तेज धूप के दौरान किसी पेड़ या छांव में बैठते हैं, तो परस्पर दूरी बनाए रखे।
- कटाई के दौरान बांधी जाने वाली पुली या गांठ को कम वजनी बनाए। इससे एक ही व्यक्ति उसे सहजता से उठा सके।
- खेती में काम में आने वाले औजारों का परस्पर स्थानांतरण नहीं करें।
- पशुओं को नियंत्रित रखने के लिए बांधी गई चैन या रस्सी को भी वाशिंग पाउडर से धोते रहे।

कर वापस आ जाता है।

बिजली आपूर्ति बंद रहेगा।

कृषि विज्ञान केन्द्र ने जारी की एडवाजयरी

लॉकडाउन की मार, ऊपर से मूंग और भिण्डी में लगा रोग

काश्तकारों ने नहीं दिया ध्यान, तो होगा काफी नुकसान

डूंगरपुर. लॉकडाउन ने काश्तकारों की कमर तोड़ दी है। वहीं, दूसरी तरफ अपने खेतों में की गई मूंग और भिण्डी में भी तरह-तरह के रोग पनप गए हैं। हालांकि, अभी यह कीट रोग प्रारम्भिक चरण में है। लेकिन, पूरे जिले के अलग-अलग क्षेत्रों में यह रोग पनपने से काश्तकारों के माथे पर चिंता की लकीरे खींच गई हैं। कृषि विज्ञान केन्द्र के मुख्य वैज्ञानिक एवं प्रभारी डा. सीएम बलाई ने बताया कि जिले के बिछीवाड़ा एवं सागवाड़ा क्षेत्र भिण्डी उत्पादन तथा मूंग जिले के अलग-अलग क्षेत्रों में हो रहा है।

मूंग के लिए कृषक यह करें उपाय

मूंग के पौधों में पीलापन नजर आ रहा है। यह पीला मोजेक बीमारी की वजह से होता है, जो एक विषाणु जनित बीमारी है। इसकी शुरूआत एक पौधे से होती है। धीरे-धीरे पूरे खेत में फैलता है। शुरू में कुछ पौधों में चितकबरे गहरे हरे पीले धब्बे दिखाई देते हैं। एक दो दिन बाद में सम्पूर्ण पौधे बिल्कूल पीले हो जाते हैं। इसके नियंत्रण के लिए के लिए बीजों को इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्ल्यूएस चार ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीज उपचार कर बुआई करें। रोगग्रस्त पौधों को जड़ सहित उखाड़ कर नष्ट करें। सफेद मक्खी पर नियंत्रण के लिए बुवाई के एक माह बाद या लक्षण दिखाई देते ही एसीटामिप्रिड 0.5 ग्राम या डाई मिथोएट दो मिली प्रति लीटर की दर से शाम के समय छिडकाव करें। मूंग की 15 लाइन के बाद दो लाइन मक्का या ज्वार लगा देवे। इसी तरह जिले के कुछ क्षेत्रों में चूर्णिल आसिता (छाछ्या) रोग भी देखने को मिल रहा है। इसमें पत्ती की उपरी सतह पर सफेद पावडर के समान दिखाई देती है। बाद में मटमेले रंग में बदल जाती है। बीमारी का प्रकोप बढने पर ये सफेद पावडर जैसी संरचना पत्ती की दोनो तरफ की सतह पर दिखने लगते है। पत्तियां असमय झड़ने लगती हैं। इसके नियंत्रण के लिए कवकनाशी दवा जैसे केराथेन दो मिली या केलेक्सीन एक मिली या सल्फेक्स तीन ग्राम प्रति लीटर की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

भिण्डी में भी लगे रोग

भिण्डी में मुख्यतः पीतशीरा मोजेक विषाणु जनित रोग फैल रहा है। यह सफेद मक्खी के द्वारा फैलता है। इसमें पत्तियां एवं फल पीले पड़ जाते हैं। पत्तियां चितकबरी होकर प्यालेनुमा हो जाती हैं। इससे पैदावर बहुत कम हो जाती हैं। धीरे-धीरे फसल पुरी नष्ट हो जाती हैं। इसके नियंत्रण के लिए खेत में पीला चिपचिपा पाश दो बीघा लगावे। रोग के शुरूआत में ही रोग ग्रस्त पौधों को तुरंत जड़ सहित उखाड़ कर नष्ट करें। नीम तेल पांच मिली प्रति लीटर की दर से छिड़काव करे। एसीटार्मिप्रड कीटनाशी 0.5 ग्राम प्रति लीटर पानी दर से छिडकाव करें। **जड़गलन रोग:** खडी फसल में बाविस्टिन दवा का दो ग्राम प्रति लीटर की दर से छिड़काव एवं चार ग्राम/लीटर की दर से ड्रेचिंग करें। **छाछ्या रोग:** पत्तियों पर सफेद चुर्णी धब्बे दिखाई देते है तथा अधिक रोग ग्रसित पत्तियां पीली पड़कर झड़ जा रही है, तो केराथेन (डायनोकेप 48 इसी) दवा एक मिली प्रति लीटर की दर से छिडकाव करे। **फल छेंदक:** खेत में टी आकार की लकड़ी या खपच्चियां 10-12 प्रति बीघा की दर से लगावे। फेरामेन ट्रेप (1 ट्रेप/बीघा) लगावे। कीट ग्रस्त फल को तोड़ कर नष्ट कर दें। प्रोफेनोफोस 40 ईसी दवा का दो मिली प्रति लीटर या इमामेक्टिन बेन्जोएट पांच प्रतिशत एससी का एक ग्राम दवा प्रति तीन लीटर पानी की दर से छिडकाव करें। **लाल मकडी :** यह आठ पैरो वाला सूक्ष्म कीट है, जो अपने तीखे मुखांगों से पौधों की पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते हैं। इससे पौधों की पत्तियां पीली पड़कर सूखने लगती हैं व फल कठोर होकर कुरूप हो जाते हैं। इसके नियंत्रण के लिए प्रोपरजाइट 57 ईसी दवा दो मिली प्रति लीटर की दर से सात दिन के अन्तराल पर दो छिडकाव करे।

डूंगरपुर. मुंग की फसल में रोग लगने पर वैज्ञानिक से जानकारी लेता काश्तकार।

कई काश्तकार सब्जी उत्पादन से जुड़े

लॉकडाउन में धरती पुत्रों ने कोरोना को हराया और सब्जी उत्पादन का नवाचार अपनाया

पत्रिका
संकट के साथी

कृषि विज्ञान केन्द्र फलोज ने सोशल मीडिया के माध्यम से काश्तकारों को किया प्रेरित

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

डूंगरपुर. बोडीगामा गांव में खेतो में सब्जी पौध निकलने के बाद निडाई-गुड़ाई करता काश्तकार।

डूंगरपुर. कृषि विज्ञान केन्द्र में द्वितीय चरण के काश्तकारों के लिए तैयार हो रहे सब्जी पौध।

डूंगरपुर. कोरोना संक्रमण के चलते प्रदेश और देश हाहाकार कर रहे हैं। लोग लॉकडाउन में घरों में फंसे हुए हैं। इस बीच डूंगरपुर के जागरूक काश्तकारों ने कृषि विज्ञान केन्द्र के कुशल मार्गदर्शन में कृषि क्षेत्र में नया रुख अख्तियार कर लिया है। कृषकों ने रबी की कटाई के बाद वीरान पड़े अपने खेतों में केन्द्र के सहयोग से उन्नत किस्म के बीज एवं पौध लेकर सब्जियां उगानी शुरू कर दी हैं और देखते ही देखते काश्तकारों के खेतों में तरह-तरह की सब्जियों के पौध लहलहाने लगे हैं।

काश्तकारों का मोड़ा रुख

कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारियों के मुताबिक केन्द्र ने लॉकडाउन की अवधि के दौरान सोशल मीडिया का सहारा लेते हुए ऐसे काश्तकारों को वरीयता दी, जो अमूमन रबी एवं खरीफ की फसलों को ही प्राथमिकता देते हैं तथा सब्जी उत्पादन में रुचि नहीं दिखाते हैं। ऐसे काश्तकारों को ऑन कॉल तथा वाट्सअप पर ग्रुप में जोड़ते हुए ऑनलाइन प्रेरित किया। काश्तकारों को बताया कि रबी की फसल के बाद खेतों में सब्जी उत्पादन आय का बेहतर जरीया बन सकता है।

द्वितीय चरण 15 हैक्टेयर

कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी डा. सीएम बलाई ने बताया कि रबी फसल कटाई एवं लॉकडाउन के दौरान काश्तकार व्यर्थ बैठे थे। ऐसे में सोशल मीडिया के माध्यम से उन्हें प्रेरित किया।

धनिये की खेती के लिए सलाह

कृषि मौसम वैज्ञानिक डा. ज्ञानप्रकाश नारोलिया के अनुसार जिले के अधिकांश काश्तकार गर्मी के मौसम में धनिया की खेती करते हैं। लेकिन, भरपूर पानी की व्यवस्था होने पर ही वह धनिया की खेती करें। लगभग 20 किलो बीज एक हेक्टेयर के लिए पर्याप्त रहते हैं। धनिया की बुवाई के लिए साबुत बीज का उपयोग किया जाता है। पौधों से पौधों की दूरी 10 सेंटीमीटर जरूरी है।

15 जून से आमदनी शुरू

केवीके की सलाह पर जिले के बोडीगामा, झरियाणा, इन्द्रखेत, माण्डवा खापरड़ा, माड़ा, डोलवर उपली, डोलवर नीचली, कहारी, देवलखास, बेरणिया, नांदली अहाड़ा आदि गांवों के बड़ी संख्या में काश्तकार जुड़ते हुए टमाटर, मिर्च एवं बैंगन की पौध लगा दी है। केन्द्र के अधिकारियों का दावा है कि जिले के 176 कृषकों ने लॉकडाउन संकट के काल में करीब सात हैक्टेयर क्षेत्र में कीचन गार्डनिंग एवं व्यावसायिक ध्येय से टमाटर, बैंगन एवं मिर्च की पौध लगा चुके हैं।

दैनिक भास्कर
29-Apr-2020
डूंगरपुर भास्कर Page 4

लॉकडाउन में 7 हैक्टेयर क्षेत्रफल में टमाटर, बैगन व मिर्च के पौधे लगाए

भास्कर संवाददाता|डूंगरपुर

जिले में रबी फसल कटाई एवं बुआई का कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है । ऐसे में कोरोना संकट में भी जिले के कृषक खेतों की ग्रीष्मकालीन जुताई के साथ-साथ सब्जियों की खेती में जुट गए है। इस वर्ष रबी फसलों की कटाई के बाद सब्जियों के रकबे में आश्चर्यजनक वृद्धि हो रही है।

कृषकों को कृषि विज्ञान केन्द्र डूंगरपुर लॉकडाउन में समय-समय पर व्हाटसएप ग्रुपों के माध्यम से एवं न्यूज पेपर्स के द्वारा खेती की सलाह जारी कर रहा है तथा केन्द्र के वैज्ञानिक फोन कॉल एवं व्हाटसएप के जरिये खेती से संबंधित समस्या का समाधान कर रहे हैं। डूंगरपुर के कृषक रोजाना कृषक फोन कॉल एवं व्हाटसएप समूहों के माध्यम से सब्जी पौध की उपलब्धता जान रहे हैं। इसी क्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र, टमाटर, मिर्च व बैगन की संकर किस्मों की पौध तैयार कर रहा हैं। जो जिले में करीब 15 हैक्टेयर क्षेत्रफल में लग सकेगी। तथा टमाटर, मिर्च व बैगन की पौध की उपलब्धता 10 मई से शुरू हो जायेगी। जिले के कृषक लॉकडाउन संकट में करीब 7 हैक्टेयर क्षेत्रफल में टमाटर ,बैगन व मिर्च की पौध लगा चुके है।

डूंगरपुर. खेतों में सब्जियों की फसल तैयार करते हुए ।

कृषि विज्ञान केन्द्र ने कृषकों को दिए सुझाव

कोरोना संकट एवं लॉकडाउन के बीच कृषि विज्ञान केंद्र डूंगरपुर की ओर से कृषकों को 6 सुरक्षात्मक सुझाव जारी किए गए है।

- आरोग्य सेतु एप डाउनलोड करे। यह एप एक ब्लूटूथ-आधारित कोविड-19 ट्रैकर है यह उपयोगकर्ता के स्थान के आधार पर जोखिम का निर्धारण करने की कोशिश करता है और उन्हें 6-फीट निकटता के भीतर सकारात्मक कोविड-19 मामले के साथ पथ को पार करने के मामले में सूचित करता है।
- खेतों की ग्रीष्मकालीन जुताई एवं सब्जी पौध लगाये समय कृषि उपकरणों कों साबुन या डिटर्जेंट या सैनिटाइजर या साबून के घोल में 30 सैकण्ड तक धोये।
- खेत में इस्तेमाल किए गए कपडे धोकर धूप में सुखा दे।
- खेत में कार्य करते समय एक दुसरे से 2 मीटर की दूरी बनाएं रखें।
- फल और सब्जियों की तुडाई के दौरान उपयोग में लाए गए थैले या झोले का आदान-प्रदान नहीं करे। साबुन से हाथ धोएं।
- यदि किसी को खांसी, सिरदर्द, बदन दर्द, सर्दी और बुखार के लक्षण हो तो तुरन्त नजदीकी सरकारी अस्पताल से संपर्क करें।

दैनिक भास्कर
04-Apr-2020
डूंगरपुर भास्कर Page 2

आपस में सोशल डिस्टेंसिंग बनाते हुए करें खेतों में कार्य, स्वयं को रखे सेनेटाइज

डूंगरपुर। कोरोना वायरस संक्रमण फैलने से रोकने के लिए जारी लॉकडाउन और ऐसे में गर्मी बढ़ने के साथ ही किसानों ने खेतों से फसलों को समेटना शुरू कर दिया है। कृषि विज्ञान केन्द्र के विशेषज्ञों ने किसानों को सलाह दी है कि फसलों की कटाई के दौरान इस बार बेहद सतर्कता बरतने की जरूरत है, जहां तक हो घरों में ही रहें व आवश्यक होने पर खेतों में कार्य करते समय मुंह व सर पर कपड़ा बांध कर रखें। आपस में 1 से 2 मीटर की दूरी बनाए रखें। कार्य के पश्चात हाथों को 20 सेकंड तक साबुन से धोएं।मौसम के पूर्वानुमानों में आगामी पांच दिन तक डूंगरपुर तहसील में आसमान साफ रहने की संभावना है। हवा की गति 9 से 20 किलोमीटर प्रतिघंटा के बेग से उत्तरी पूर्वी से उत्तरी पश्चिमी दिशा से चलने तथा अधिकतम तापमान 35 से 38 एवं न्यूनतम 19 से 23 डिग्री से. रहने के साथ वायु में आर्द्रता की मात्रा अधिकतम 15 से 35 प्रतिशत तक एवं न्यूनतम 7 से 10 प्रतिशत रहने की सम्भावना है। विशेषज्ञों ने कहा है कि कोरोना वायरस संक्रमण के मामले लगातार बढ़ रहे हैं, ऐसे में फसल कटाई में लगे किसानों को ज्यादा सतर्कता बरतने की जरूरत है। फसल कटाई यथा संभव मशीन चलित उपकरणों से करें।